Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 259 (B)

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता

Guest Editor -
Dr. Babasaheb M. Gore,
Principal,
Janvikas Mahavidyalaya Bansarola,
Tq.- Kaij, Dist.- Beed

Executive Editors :
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade
Dr. Gopal S. Bhosale
Dr. Ramesh M. Shinde
Dr. Arvind A. Ghodke

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	उत्तर भारत की रामलीला की विशेषताएं	डॉ. अमिला दमयंती	07
2	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा	प्रधानाचार्य डॉ. बाबासाहेब गोरे	10
3	प्रतिरोध की आत्माभिव्यक्ती : शिकंजे का दर्द	डॉ. रमेश शिंदे	14
4	हिंदी उपन्यासो में आदिवासी विमर्श	डॉ. के. बी. गंगणे	19
5	हिंदी कहानियों में किन्नर विमर्श	डॉ. विरश्री आर्य	22
6	हिंदी साहित्य में दलित चेतना	डॉ. विश्वनाथ भालेराव	26
7	भारत के सांस्कृतिक संघर्ष में दलित साहित्य की भूमिका	प्रा. किरण भोसले	29
8	मराठी लेखक श्रेणीक अन्नदाते की कहानियों में व्यक्त जैन जीवन	डॉ. महावीर उदगीरकर	33
9	वैश्विकरण और बाजारवाद के दौर में हिंदी की बदलती भूमिका	डॉ. यशोदा मेहरा	37
10	हिंदी की वैश्विक स्थिति	डॉ. रेविता कावळे	40
11	भारतीय संस्कृति तथा प्राचीन साहित्य	डॉ. कुमारी प्रेमलता	43
12	'जूठन' आत्मकथा में दलित विमर्श	अमृता तौर, डॉ. बी . आर. नळे	47
13	भारत की धार्मिक एंव व्यापारिक यात्राएं : धर्म संस्कृति एंव भाषाओं की संवाहक	डॉ. संदीप कालभोर	50
14	समकालीन हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श	डॉ. अमरनाथ तिवारी	53
15	हिंदी साहित्य की महिला प्रवासी साहित्यकार	डॉ. द्वारका गीते - मुंडे	57
16	विश्व साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य का योगदान	डॉ. अमित शुक्ल	60
17	स्त्री विमर्श का सौदर्य : जोतिबा फुले	छत्रसींग तडवी	64
18	कृष्णा सोबती के उपन्यासो में नारी का संघर्ष	डॉ. गजानन बने	67
19	छायावादी काव्य में सांस्कृतिक चेतना	डॉ. ज्ञानेश्वर गाडे	69
20	लोकसाहित्य में लोकगीतों का महत्व	डॉ. नरसिंगदास बंग	72
21	सांस्कृतिक पर्व और मुस्लिम कथाकार	डॉ. यतींद्र सिंह	75
22	आदिवासी जन-जीवन एवं वर्तमान शिक्षा व्यवस्था	डॉ. मो. माजिद मियाँ	79
23	मराठी दलित साहित्य का हिंदी साहित्यपर प्रभाव	डॉ. सुधीर वाघ	84
24	वैश्विक परीदृश में भारतीय संस्कृति और साहित्य : हिंदी उपन्यासों के संदर्भ में	डॉ. कल्पना पाटोळे	87
25	भारतीय संस्कृति और साहित्य	डॉ. अंजली कायस्था	90
26	भारतीय संस्कृति और साहित्य	विनिता कुमार	95
27	भारतीय संस्कृति व संस्कार	डॉ. सुषमा पुरवार	98
28	भारतीय संस्कृति और साहित्य	डॉ. अनिता प्रजापत	102
29	भारतीय संस्कृति और साहित्य	डॉ. राम खलंग्रे	105
30	समकालीन आदिवासी कविता के नये स्वर	डॉ. अनिलकुमार राठोड, प्रा. हिरामण टोंगारे	109
31	आदिवासी लोकसाहित्यातील स्त्री –जीवनाचा समाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ. गंगाराम सुरेवाड	113
32	भारतीय संस्कृति एवं साहित्य	डॉ. अमिता श्रीवास्तव	117
33	भारतीय संस्कृति और साहित्य	प्रा. सुनील शिंदे	121
34	कृष्णा सोबती की कहानियों में व्यक्त नारी समस्याएँ	डॉ. वंदन जाधव	123

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -259 (B) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्परिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श

डॉ. के. बी. गंगणे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
सुंदरराव सोलंके महाविद्यालय, माजलगांव
जिला बीड़ 431 131(महाराष्ट्र)
kbgangane@gmail.com

बहुत लंबी यात्रा कर चुकी मानवता के बीच उसी के इर्द-गिर्द एक और मानवता है जो अति प्राचीन काल से प्रकृति के सानिध्य में अपनी अनूठी शैली का जीवन जीती चली आयी और भौतिक प्रगति की दृष्टि से अब भी कमोबेश वहीं की वहीं है ।अपने आदिम सरोकारों और संस्कारों के साथ ,जिसे हमने 'आदिवासी 'नाम दिया है ।कम से कम इस महादेश और समाज के लिए यह वर्ग है जो निर्विवाद रूप से इस राष्ट्र के मूल वासी हैं।युग युगों से जिन्हें पहले समतलों से पहाड़ों- जंगलों में धकेला जाता रहा और अब वहां से भी खदेड़ा जा रहा है । विकास के नाम पर उन्हें विस्थापित किया जा रहा है । जिससे आदिवासी समाज में बदलते परिवेश में अनेक समस्या है निर्माण हो गई है ।जिसे समकालीन साहित्यकारों ने अपने साहित्य में चित्रित किया जिससे आदिवासी विमर्श का नया प्रवाह समकालीन भारतीय साहित्य में निर्माण हुआ ।

आदिवासी विमर्श समकालीन हिंदी साहित्य के विविध विमर्श में सबसे तेजी से उभरता हुआ विमर्श है। यूं तो आदिवासी विमर्श का प्रारंभ स्वतंत्रता से पहले ही हो चुका था ,किंतु सभ्य समाज एवं साहित्य की उपेक्षा से यह लंबे समय तक हाशिए पर ही रहा ।संविधान में मिले विशेष प्रावधानों एवं संवैधानिक अधिकारों के कारण सदियों से संघर्षरत आदिवासी प्रतिरोध करने एवं सामूहिक रूप से विद्रोह करने की चेतना का विकास हुआ। आज भूमंडलीकरण ,बाजारवाद की तरह आदिवासी विमर्श भी पूरे विश्व में समान संवेदना के साथ समझा जा रहा है ।हिंदी उपन्यास साहित्य में भी अनेक उपन्यास कारों ने आदिवासी समाज के जीवन संघर्ष को पूरी वास्तविकता के साथ चित्रित किया है ।हिंदी में आदिवासी जीवन पर केंद्रित अनेक उपन्यास लिखे गए जिसमें चर्चित रचनाएं रांगेय राघव का 'कब तक पुकारूं ',राजेंद्र अवस्थी 'का जंगल के फूल ',शिवप्रसाद सिंह का 'शैलुष ',संजीव का 'धार', 'जंगल जहां शुरू होता है', श्री प्रकाश मिश्र का 'जहां बास फूलते हैं' मैत्री पुष्पा का 'अल्मा कबूतरी', भगवानदास मोरवाल का 'काला पहाड़', रविंद्र का 'ग्लोबल गांव के देवता' महुआ मांझी का 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ,' राकेश वत्स का 'जंगल के आस पास' मधुकर सिंह का 'बाजद अनहद ढोल 'आदि महत्वपूर्ण रचनाएं हैं। डॉ. श्यामचरण दुबे कहते हैं," हिंदी उपन्यास की उल्लेखनीय सफलताओं के बावजूद भारत के सामाजिक यथार्थ के आकलन में उसकी सीमा और न्यूनताएँ चुभने वाली है ....।भूमिहीन खेतिहर बंधुआ मजदूरों और श्रमिकों पर जो लिखा गया है वह नाकाफी है और संतोषजनक भी नहीं ।आदिवासियों और दरिद्र समाज का दर्द भी अभिव्यक्त नहीं.....।"[1]

आदिवासी समाज का यथार्थ चित्रण जयसिंह के 'कलावे' उपन्यास में किया गया है । जिसमें भील आदिवासियों के कलावे नामक समुदाय के अंर्तसंघर्ष अभिव्यक्त हुए हैं । विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के संदर्भ में यह उपन्यास कलावे समुदाय के साथ संपूर्ण गांव का चित्रण करने में कामयाब हुआ है । ज़यप्रकाश भारती द्वारा लिखें 'कोहरे में खोए चांदी के पहाड़ ' में देहरादून के एक आंचल में वास करने वाले पहाड़ी आदिवासियों के सांस्कृतिक पक्ष की विस्तृत अभिव्यक्ति हुई है ।बहुपति परंपरा के पक्ष को इस उपन्यास में उभारा आ गया है

।लेखक ने टिप्पणी की है कि , 'अज्ञान एवं अंधविश्वास के कोहरे में चांदी के पहाड़ ढके हुए हैं और जब तक गरीबी, अंधविश्वास ,अज्ञान एवं अनैतिक शोषण का अंत नहीं होगा तब तक इस अंचल का विकास असंभव है । तेजिंदर का उपन्यास 'काला पादरी 'को आदिवासी जीवन की अभिव्यक्ति की एक अधिकारीक कृति कही जा सकती है । जिसमें दो संस्कृतियों की टकराहट मे पैदा होने वाली जटिलताओं का खूबसूरत चित्रण हुआ है । इस उपन्यास के केंद्र में धर्मान्तरण है और प्रमुख आदिवासी पात्र अपने परंपरागत धर्म को छोड़कर ईसाई बन जाता है ।

श्री प्रकाश मिश्र के ' जहां बांस फूलते हैं ' उपन्यास में मिजोरम के आदिवासी संघर्ष की कथा का वर्णन किया गया है । जो उपन्यासकार के प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर है । डॉ.महेंद्र भटनागर ने इस उपन्यास के बारे में लिखा है कि , "प्रसिध्द उपन्यास ऐतिहासिक न होते हुए भी इतिहास से संबंध है , तमाम घटनाचक्र इतिहास सम्मत है, उसमें कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं.....। एक संपूर्ण जनजाति की गाथा है, उसमें मिजो विद्रोह का क्रमिक विवरण है । किसी भी डॉक्यूमेंट्री फिल्म की तरह ।" [२] इस उपन्यास का केंद्रीय तत्व है कि व्यवस्था के विरुद्ध मिजो आदिवासी हथियार उठाने से नहीं चूकते और सामंती शोषण के प्रतिनिधियों के विरुद्ध मोर्चा खोलते हैं । शायद हिंदी में पूर्वोत्तर के जीवन को गहराई से समझने और समझाने वाला यह पहला उपन्यास है ।

हमारी सामाजिक व्यवस्था आदिवासियों को हमेशा समाज के निचले पायदान पर खड़ा करती है और उन्हें अपनी बुनियादी जरूरतों और अधिकारों से वंचित रखती है । सत्ताधारी वर्ग भी आदिवासी जनजातियों के सामाजिक जीवन में अयाचित घुसपैठ कर रहे हैं और प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा जमा कर उन्हें हर स्तर पर विस्थापित करते हुए उनके अस्तित्व को भी चुनौती दिए जा रहे हैं । रमणिका गुप्ता का यह शब्द देखिए ," विकास के नाम पर आदिवासी को विस्थापित कर जंगल और जल से वंचित कर जंगलों से बाहर खदेड़ा जा रहा है। वह प्रकृति से संवाद करता चलता है , उसका सहयात्री है , उसको गाय की तरह पलता और दुक्षता है "[३] इन प्रकृति - पुत्रों पर जो हमला हो रहा है वह हमारे सांस्कृतिक पतन का सूचक है । इसलिए इस अप्रत्याशित परिवेश में आदिवासियों के मुक्ति संघर्ष को अपनी रचना धर्मिता का आधार बना लेते हैं संजीव । इस दृष्टि से उनके उपन्यास 'सावधान नीचे आग है ' , ' धार ' , 'पांव तले की दूब ' और ' जंगल जहां शुरू होता है ' विशेष ध्यातव्य है । ' सावधान नीचे आग है ' में संजीव ने बिहार के झरिया- धनबाद कोयला क्षेत्र में मजदूरी करने वाले आदिवासियों की अभावग्रस्त जिंदगी को बड़ी शिद्दत के साथ उकेरने का प्रयास किया है । खदान माफिया , इजारदार , सूदखोर और दलालों के बहुआयामी शोषण से आदिवासी मजदूरों की जिंदगी बहुत सोचनीय बन गई । सत्ता एवं सामंती शक्तियां मिल कर अंगारडीह के आदिवासियों की जमीन हड़पने की कोशिश करती हैं । ' धार 'उपन्यास को आदिवासी विद्रोह की अनोखी दास्तान माना सकता है । लेखक ने संथाल परगना और छोटा नागपुर के कोयला खदानों में काम करने वाले श्रमजीवी आदिवासियों की बदहालत को उजागर करने का प्रयास किया है । उपन्यास में महेंद्रर बाबू सरीके शोषकों के शिकंजे से मुक्त करने के लिए अविनाश शर्मा और संथाली नारी मैना संथाल आदिवासियों में नई चेतना भरने की जबरदस्त कोशिश करती है । ' पाव तले की दूब 'में शोषण के प्रति झारखंड आदिवासियों के सक्रिय विद्रोह का जीता जागता चित्र है । औद्योगिक विकास परियोजनाओं के नाम पर झारखंड के आदिवासी समाज को अन्याय ,शोषण ,बेदखली विस्थापन जैसी अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है । ' जंगल जहां शुरू होता है ' में संजीव आदिवासी लोगों की अज्ञानता जागरण का अभाव अपने अधिकारों के प्रति अनभिनज्ञता आदि पर् वे विशेष बल देते हैं । उपन्यास में मास्टर मुरली पांडे डी.एस.पी. कुमार और आदिवासी युवक कानी अपने-अपने ढंग से आदिवासी समाज में सुधार लाने का प्रयत्न करते हैं । भारतीय समाज में व्यवस्था द्वारा उपेक्षितों के प्रति नकारात्मक रूख, पूंजीपतियों के अमानवीय उत्पीड़न, प्रशासन और पूंजीपतियों की मिली'भगत से विवश होकर जनजातीय समाज के सदस्य प्रचुर मात्रा में अपराधी बन रहे हैं । इस समस्या के तरफ

भी संजीव इस उपन्यास के माध्यम से प्रश्न निर्माण करते हैं। " संजीव के उपन्यास साहित्य की खासियत यह है कि उनमें समाज के उपेक्षित वह हशिएकृत वर्ग को विशेषकर आदिवासी जन समुदाय को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की जबरदस्त कोशिश विद्यमान है। "4

अल्मा कबूतरी ' आदिवासी कबूतरा जाती पर केंद्रित है। इसमें मैत्रेयी पुष्पा ने एक ऐसे समाज को प्रस्तुत किया है जिसमें नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय है। अल्मा प्रस्तुत उपन्यास का केंद्रीय नारी पात्र है उसके जीवन संघर्ष को प्रस्तुत रचना में चित्रित किया है। आदिवासी कबूतरा समाज में पंचायत को बहुत अत्यधिक महत्व है। पंचायत के सभी निर्णय को मानना ही पड़ता है। उपन्यास में आदिवासी कबूतरा जाति के लोक संस्कृति का यथार्थ चित्रण हुआ है साथ ही अल्मा के माध्यम से आदिवासी औरत का संघर्ष एवं उसकी अदम्य जिजीविषा को दर्शाया है। ' ग्लोबल गांव के देवता ' रणेन्द्र का झारखंड के आदिवासी '.असुर ' को केंद्र में रखकर रचा गया है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। इस उपन्यास का महत्व इस दृष्टि से भी बढ़ जाता है कि इसमें असुर जनजाति के सामाजिक , सांस्कृतिक वशिष्ट्य को बड़ी खूबसूरती से चित्रित किया गया है। इसमें असुर समुदाय की ऐतिहासिक विकास यात्रा पर प्रकाश डाला है। साथ ही उनके जीवन संघर्ष को भी प्रस्तुत किया है। 'जंगल के फूल ' राजेंद्र अवस्थी द्वारा लिखित बहुचर्चित उपन्यास है। जो मध्यप्रदेश के बस्तर के गोंड आदिवासियों के जीवन को अंकित करता है। उपन्यास का नायक सुलकसाये है जो गढ़बंगाल के मुखिया का बेटा है। उपन्यास की नायिका गढ़बंगाल की लड़की महुआ है। दोनों प्रेमी है लेकिन इनमें देश सेवा के भाव के कारण वे आजन्म अविवाहित रहना चाहते हैं। उपन्यास में आदिवासी जीवन , देशप्रेम , अंग्रेज शासकों के खिलाफ आदिवासियों की नीति को भी उजागर किया है। डॉ. परदेसी के शब्दों में, " इसमें एक और आदिवासियों की संस्कृति , रीति-रिवाजों को चित्रित किया है तो दूसरी ओर अंग्रेजी शासन काल में आदिवासियों द्वारा किए गए विद्रोह को अंकित किया गया है।" ५

निष्कर्ष: कहा जा सकता है कि भारत के दुर्गम पर्वत श्रंखलाओ में बसे आदिवासियों का जीवन विभिन्न समस्याओं से भरा पड़ा है। औद्योगिक विकास के नाम पर आदिवासियों का बलि दिया जाता है। विकास के नाम पर उनकी जमीन हड़प ली जाती है। डाकू बनने के लिए मजबूर किया जाता है। जल ,जमीन, जंगल ,भाषा और संस्कृति आदिवासियों की अस्मिता है। आज वैश्वीकरण के दौर में आदिवासियों की सभ्यता और संस्कृति को समझने की प्रयास नहीं किए गए उन्हें उनकी जल , जमीन ,जंगल से बेदखल किया जा रहा है। उन्हें संवैधानिक अधिकारों से वंचित रखा गया है। अंधविश्वास रुढियां,अशिक्षा , अज्ञान ,शोषण आदि के कारण आदिवासी समाज में अनेक समस्याएं निर्माण हो गई है। इसी आदिवासी जीवन संघर्ष को हिंदी उपन्यास कारों ने अपने साहित्य में व्यापक स्तर पर रेखांकित करने का प्रयास किया है।

संदर्भ :

१. आदिवासी दुनिया- हरिराम मीणा, पृष्ठ -१९२
२. आदिवासी दुनिया - हरिराम मीणा, पृष्ठ- १९५
३. समकालीन हिंदी साहित्य और नए विमर्श - डॉ. प्रमोद कोवप्रत, पृष्ठ -७३
४. समकालीन हिंदी साहित्य और नए विमर्श - डॉ प्रमोद कोवप्रत, पृष्ठ- ७३
५. राजेंद्र अवस्थी का कथा साहित्य - डॉ.भाऊसाहेब परदेशी, पृष्ठ- ४५

ISSN : 2582-1792 (P)

IMPACT 2020 5.56 SJIF FACTOR

शोध समागम®

A DOUBLE-BLIND, PEER-REVIEWED QUARTERLY
MULTI DISCIPLINARY AND BILINGUAL RESEARCH JOURNAL

SHODH SAMAGAM

A Double - Blind, Peer-Reviewed, Quarterly,
Multidisciplinary and Multilingual Research Journal

Special Issue for Webinar

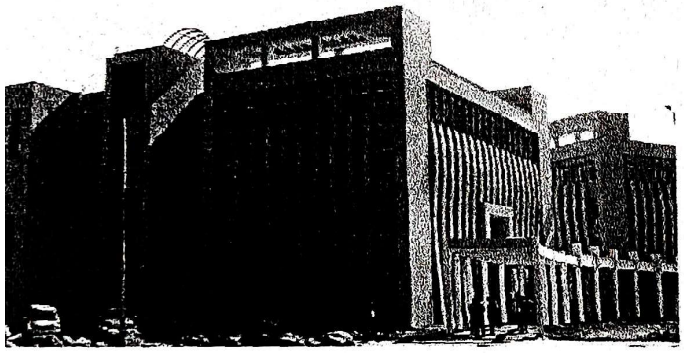

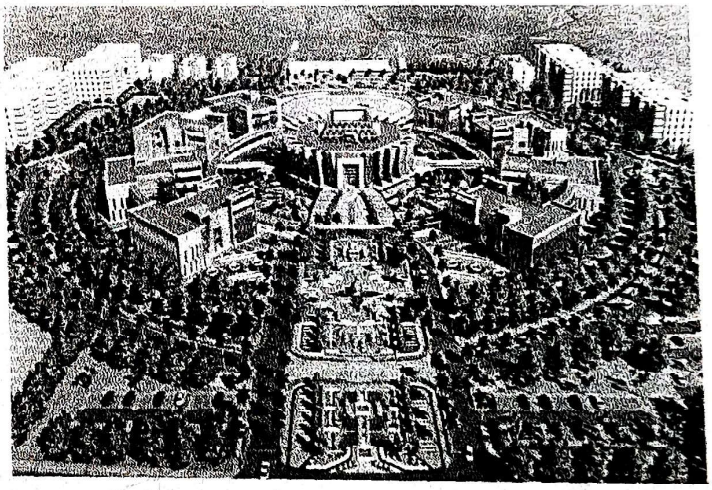

गांधी, शास्त्री का भारत और हम
(शिक्षा, राजनीति, स्वावलंबन और मीडिया के संदर्भ में)
(2, 3 अक्टूबर 2020)

आयोजक

आचार्यकुल, भारत, केंद्रीय हिंदी संस्थान, एम आई टी, विश्विद्यालय पुणे और अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में

Aditi Publication
Raipur, Chhattisgarh
www.shodhsamagam.com

17.	महात्मा गांधी के विचारों पर नरसी मेहता का प्रभाव **रेखा गुप्ता**, जयपुर, राजस्थान	66–68
18.	गाँधी और स्वावलंबन **डॉ. कादम्बिनी मिश्र,** जबलपुर, मध्यप्रदेश	69–71
19.	हिंदी उपन्यासों पर गांधी विचारधारा का प्रभाव **डॉ. के. बी. गंगणे,** बीड़ महाराष्ट्र	72–75
20.	गांधी और रचनात्मक क्रांति, आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम **डॉ. जूही शुक्ला,** प्रयागराज, उत्तरप्रदेश	76–79
21.	भारतीय वांग्मय में जीवन मूल्यों की वैश्विक संस्कृति **प्रीति पाण्डेय,** जबलपुर, मध्यप्रदेश	80–82
22.	गांधीवाद एवं विजयदान देथा का कथा साहित्य **पीताम्बरी,** अजमेर, राजस्थान	83–85
23.	आपदा में तनाव मुक्त करता हिंदी साहित्य **डॉ. आस्था तिवारी,** रायपुर, छत्तीसगढ़	86–90
24.	भारतीय संस्कृति से परास्त होता कोरोना **डॉ. शालिनी माहेश्वरी,** मथुरा, उत्तरप्रदेश	91–95
25.	कठोर धरातल की कसौटी पर गांधी–शास्त्री का भारत **प्रो. बीना शर्मा,** निदेशक, केन्द्रीय हिंदी संस्थान	96–97
26.	पुराण साहित्य तकनीक परंपरा का समन्वय **डॉ. ऋतु माथुर,** प्रयागराज, उत्तरप्रदेश	98–102
27.	नई शिक्षा नीति के संदर्भ में रविन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता **पूर्णिमा कुमारी,** आसनसोल	103–105
28.	कलाधर्मी रवीन्द्रनाथ टैगोर की कला यात्रा का एक रूप –"चित्रकला" **डॉ. श्रीमती वीणा चौबे,** भोपाल, मध्यप्रदेश	106–108
29.	ऋग्वेद में योग का स्वरूप **गुड़िया कुमारी,** राँची, झारखंड	109–112
30.	राजभाषा हिन्दी : दशा एवं दिशा **डॉ. मो. मजिद मियाँ,** सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल	113–117
31.	स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन (नई शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में) **डॉ. साधना तामोट,** बैरागढ, भोपाल, मध्यप्रदेश	118–120
32.	गाँधी और फिल्मकार **डॉ. सुनीता अवस्थी,** अजमेर, राजस्थान	121–123
33.	वर्तमान शिक्षा पद्धति में गांधी चिंतन की झलक **सारिका शर्मा,** भिलाई, दूर्ग, छत्तीसगढ़	124–125
34.	कर्मसन्यास योग **डा. आरती वाजपेयी,** लखनऊ, उत्तर प्रदेश	126–127
35.	राष्ट्रवाद का रबीन्द्र संगीत **डा. मनोज अवस्थी,** अजमेर, राजस्थान	128–130
36.	A Strategic Evaluation of Mahatama Gandhi's Struggle for Freedom **Garima Shukla,** Jabalpur, Madhya Pradesh	131–133

हिंदी उपन्यासों पर गांधी विचारधारा का प्रभाव

डॉ. के. बी. गंगणे, हिंदी विभागाध्यक्ष,
सुंदरराव सोलंके महाविद्यालय, माजलगांव, जिला–बीड़, महाराष्ट्र

किसी व्यक्ति– विशेष का जीवन दर्शन सारे विश्व के लिए अनुकरणीय इसलिए होता है कि वह अपने जीवन का बलिदान सिर्फ अपने देश के लिए नहीं बल्कि सारे विश्व के लिए करता है। महात्मा गांधी भी एक ऐसे ही महा मानव थे जिनकी विचारधारा का प्रभाव पूरे विश्व में छाया हुआ है। इसी कारण ही आइंस्टाइन ने एक स्थान पर लिखा था "क्या आने वाली पीढ़ियाँ यह विश्वास करेगी कि महात्मा गांधी जैसा हाड़–माँस का जीता जागत एक व्यक्ति इस धरती पर कभी रहा होगा।" गांधी विचार महात्मा गांधीजी की विचार पद्धति का व्यापक नाम है रामनाथ सुमनजी के अनुसार, "गांधी विचार का साधारण अर्थ व्यक्ति तथा समाज के हित का वह दर्शन एवं विज्ञान है जिसके प्रधान पुरस्कता और प्रयोगकता गांधीजी है।"[1] विभिन्न क्षेत्रों का गहन अध्ययन, चिंतन और मनन के उपरांत गांधीजी ने जिस विचारधारा का प्रतिपादन किया वह मूलतः अध्यात्मिक जीवन दर्शन है। उन्होंने असत्य पर सत्य, हिंसा पर अहिंसा, अधर्म पर धर्म, असद पर सद्, भौतिक–मूल्यों पर आध्यात्मिक मूल्यों, पशुता पर मानवता और अनैतिकता पर नैतिकता की घोषणा की है। गांधी विचार के मूल स्तंभ है सत्य और अहिंसा। सर्वोदय, सत्याग्रह एवं रामराज्य गांधीजी के तीन आदर्श थे। संक्षेप में गांधीजी की सोच, गांधीजी की जीवन शैली और गांधीजी के कार्यप्रणाली का ही समवेत नाम 'गांधीवाद' है। महात्मा गांधी आधुनिक युग के ही नहीं समुचे मानव इतिहास के असाधारण रूप से महान पुरुष थे। एक राजनीतिक नेता के रूप में गांधीजी की भूमिका महत्वपूर्ण है। जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अहिंसात्मक संघर्ष किया। वह राजनेता के साथ–साथ प्रथम कोटि के समाज सुधारक, सत्य शोधक, अध्यात्मिक साधक, अर्थशास्त्री शिक्षा–शास्त्री और लेखक–विचारक थे। ये उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू थे। आज जिस प्रकार जटिल परिस्थितियाँ संपूर्ण विश्व में दिखाई दे रही हैं ऐसे प्रतिकूल परिवेश में सही दिशा –दर्शन के लिए हमें आज भी उनके विचारों की आवश्यकता है। साहित्य में भी समय–समय पर उसकी अभिव्यक्ति होती रही है। प्रत्येक युग के साहित्य पर तत्कालीन परिस्थितियों, प्रवृत्तियो तथा विशेष महानुभवों का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से दिखाई पड़ता है। राष्ट्र पिता महात्मा गांधी अपने युग के महानायक थे उनके विचारों से हिंदी साहित्य भी प्रभावित है। हिंदी साहित्य में अनेक साहित्यकारों ने गांधी के विचारों उनके तत्वों के माध्यम से समाज में नई जागृति निर्माण करने का कार्य किया। हिंदी के अन्य विधाओं की तरह ही उपन्यास साहित्य पर भी गांधीवाद का प्रभाव स्वतंत्रता पूर्व से लेकर आज तक दिखाई देता है। गांधीजी का नारा था 'गांव की ओर चलो।' उनका सपना था ग्रामीण परिवेश विकास से ही देश का विकास हो सकता है। गाँव को स्वयं पूर्ण बनाना होगा, क्योंकि भारत देश की ज्यादातर आबादी गांव में ही बसी है। हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार मार्कण्डेय ने गांधीजी के इस विचारधारा से प्रभावित होकर 'अग्निबीज' उपन्यास में स्वतंत्रता के पश्चात विकास की ओर अग्रेसर एक गाँव का चित्रण किया है। 'अग्निबीज' उपन्यास का केंद्र बिंदु ही गांधी विचारधारा है। संपूर्ण कथानक में गांधीवादी आश्रम विभिन्न राजनीतिक विचारधाराएं और नई पीढ़ी में विकसित हो रही नई चेतना को रखा है, "कथा के केंद्र में गांधीवादी आश्रम, विभिन्न राजनीतिक विचारधाराएँ और नई पीढ़ी में विकसित हो रही नई चेतना को रखा है। यह मूलतः ग्राम जीवन में उभरते नए अंकुरों की कथा है।"[2] उपन्यास का आरंभ गांधीवादी आश्रम के क्रियाकलापों से होता है। भाईजी और भागो बहन निस्वार्थ भाव से आश्रम को चलाते हैं। गांधी विचारों से पूर्णतः समर्पित साधो का भी इस कार्य में सक्रिय है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी के साथ कार्य किया था। गांधीवादी विचारों को लेकर चलने वाला यह आश्रम गरीब युवा पिछड़ी जाति के लोगों की उन्नति और सुधार हेतु निरंतर प्रयास करता है।

वर्तमान भारत में जिस प्रकार की शिक्षा पद्धति प्रचलित है वह भी इतनी दूषित और भ्रष्ट है कि वह न तो विद्यार्थियों का सही मूल्यांकन करती है और ना शिक्षण प्रक्रिया को ठीक रखपाती है। संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया परीक्षा केंद्रित हो गई है उसमें विद्यार्थियों के समग्र विकास का बिंदु नहीं रह गया। गांधीजी तो शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास चाहते थे, "गांधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण करना है। इसके

[illegible] तथा सामाजिक विकास अर्थात् जीवन [illegible] सभी पक्षों पर बल थे, शिक्षा का उद्देश्य गांधीजी के लिए [illegible] था। वे बच्चों को स्वावलंबी बनाना [illegible]।" 'अमिता' उपन्यास में [illegible] अपना जीवन देश के लिए समर्पित करने का निर्णय लेता है। [illegible] 'विद्यालय' [illegible] नहीं शिक्षा [illegible] पढ़ाने का कार्य करने लगता है।

गांधीजी का मानना था कि 'अहिंसा' ही विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। अहिंसा का अर्थ उनकी दृष्टि में अत्यंत व्यापक था। उनके अनुसार केवल जीव की हत्या न करना ही अहिंसा नहीं अपितु मन वचन और कर्म से किसी को हानि न पहुंचाना ही 'अहिंसा' है। गांधीजी विश्व इतिहास में अहिंसा के सबसे बड़े विचारक और प्रचारक हुए हैं। यद्यपि महावीर स्वामी और ईसा मसीह ने भी अहिंसा की बात की है। गांधीवाद के मूल तत्वों के अंतर्गत सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह प्रमुख हैं। उनमें भी सत्य और अहिंसा तो गांधीवाद के प्राण हैं। गांधीजी का समग्र जीवन इन्हीं दोनों तत्वों से अनुप्राणित है। अहिंसा को गांधीजी सत्य का और सत्य को अहिंसा का पूरक मानते हैं। गांधीजी के इन्हीं अहिंसावादी विचारों से प्रभावित होकर यशपाल ने 'अमिता' यह प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास लिखा। जिसमें गांधीजी का अहिंसा यह तत्व केंद्र में है। जिसमें हृदय परिवर्तन एवं हिंसा पर अहिंसा की विजय का चित्रण किया गया है। भारतीय इतिहास की प्रसिद्ध घटना अशोक के कलिंग विजय और उसके उपरांत उसके हृदय परिवर्तन से [illegible] रचती है। उपन्यास में सम्राट अशोक का यह परिवर्तन अमिता द्वारा मन के माध्यम से दिखाया है जो एक छोटी सी बालिका अमिता है। वस्तुतः सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन में प्रेम और अहिंसा के सामने हिंसा और युद्ध की भयंकरता का समर्पण दिखाया है। यही अहिंसा की नीति ही विश्व में शांति स्थापित कर सकती है। यही प्रतिपादित करना ही उपन्यासकार का मुख्य प्रयोजन है। यहां मार्क्सवादी यशपाल पर भी गांधीवाद का प्रभाव दिखाई देता है, "अमिता में गांधीवादी हृदय परिवर्तन जैसे मार्क्सवादी यशपाल पर पूर्णतया हावी हो गया है। अपनी समग्र चेतना और सजगता के बावजूद यशपाल गांधीवाद के प्रभाव से नहीं बच सके।"[7] हिंसा की अपेक्षा हृदय परिवर्तन गांधीजी का अहिंसात्मक पक्ष था। हिंदी के उपन्यास सम्राट प्रेमचंद भी गांधीवादी विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित थे। देश के राजनीति में जो कार्य गांधीजी ने किया वही कार्य साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद ने किया। गांधीजी का शस्त्र अहिंसा था तो प्रेमचंद कलम के सिपाही थे। "भारतीय साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद की वही भूमिका रही है जो भारतीय राजनीति के इतिहास में गांधीजी की। यदि भारतीय ग्राम और भारतीय किसान की खोज द्वारा गांधी ने भारत की राजनीति में एक ऐतिहासिक मोड़ दिया तो प्रेमचंद ने भारतीय ग्राम और भारतीय किसान को साहित्य में प्रतिष्ठित कर भारतीय साहित्य को एक ऐतिहासिक मोड़ दिया।"[8] प्रेमचंद का 'रंगभूमि' उपन्यास राष्ट्र के स्वाधीनता संग्राम की व्यापक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। उपन्यास का नायक अंधा भिखारी सूरदास को बनाया गया है। और उसे गांधी का प्रतीक बनाकर सत्य, धर्म और न्याय की रक्षा के लिए औद्योगिक सभ्यता, साम्राज्यवादी कुशासन तथा सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष के लिए 'रंगभूमि' उपन्यास में उतारा। 'रंगभूमि' का हीरो सूरदास वह है जो असहयोग की सर्वोच्च स्थिति में हिंसा को रोकने के लिए अपने प्राण दे देता है। गांधीजी के अनुसार," देश के लिए मर जाना एक वीरता पूर्ण कार्य है। अत्याचारी का खून बहाने के स्थान पर अपना खून बहाने वाले सत्याग्रही एक बहादुर ही नहीं बल्कि देवता है।"[9] 'हृदय परिवर्तन' के अमोघ अस्त्र को प्रेमचंदजी ने समाज की सभी समस्याओं का हल बताया है। 'गोदान' रचने के पीछे प्रेमचंद का उद्देश्य तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियों को बतलाने के साथ–साथ शोषक– शोषित, अमीर– गरीब के बीच की दूरी खत्म करना था। ताकि गरीब एक आम इंसान की तरह जी सके। ठाकुर अमरपाल सिंह के हृदय परिवर्तन के पीछे यही उद्देश्य रहा होगा तभी तो वह किसानों को उनकी जमीन लौटाने की बात करते हैं। गांधीजी भी यही मानते थे कि धन संपन्न व्यक्ति का दायित्व है कि वह दुर्बल की मदद करें अन्यथा उसका जीवन निरर्थक है। 'गोदान' का होरी स्वयं कष्ट सहता है पर दूसरों को दुखी नहीं देख सकता।

गांधीजी महिलाओं की दयनीय दशा को लेकर भी चिंतित थे और वे महिलाओं को पुरुषों के समान सामाजिक मान –प्रतिष्ठा और अधिकार दिलाने के प्रबल पक्ष धर थे। इसी कारण उन्होंने नारी अशिक्षा औरबाल विवाह जैसी कुरीतियों का विरोध किया। सन् 1930 में गांधीजी ने स्त्रियों को विदेशी वस्तुओं की दुकानों, शराब घरों

और सरकारी संस्थानों पर धरना देने के लिए प्रेरित किया जिसकी प्रेरणा पाकर भारतीय स्त्रियां घर की देहली छोड़कर बाहर आई। इसका प्रभाव प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। 'कर्मभूमि' में सुखदा हरिजनों के 'मंदिर प्रवेश आंदोलन' का नेतृत्व करती है और जेल जाती है। इसके अलावा सकीना, बुढ़िया पठानिन, रेणुकादेवी, मुन्नी आदि ब्रिटिश सरकार का विरोध करती हुई जेल जाती है, नैना तो जुलूस का नेतृत्व करती हुई शहीद ही हो जाती है। 'गोदान' की मालती देश सेवा और समाज सेवा के लिए विवाह न करने का व्रत लेती है। 'सेवासदन' में वेश्या–जीवन से संबंधित सभी पहलुओं को प्रस्तुत करते हुए स्त्री समस्याओं को गांधीवाद से प्रभावित होकर चित्रित किया है।

गांधीजी ने मानवीय संवेदना की दृष्टि से ही नहीं राजनीतिक व्यावहारिकता के तहत भी अछूतोद्धार उधार आंदोलन का प्रारंभ किया था। इससे प्रेरित होकर प्रेमचंद के साहित्य में भी दलित समस्याओं का चित्रण प्रखरता से आया है। 'कर्मभूमि' उपन्यास में सुखदा और शांतिकुमार के नेतृत्व में हरिजनों के मंदिर प्रवेश का आंदोलन सफल हो जाता है। इसी उपन्यास में अमरकांत हरिजनों के गांव में बसकर उनके सुधार के प्रयासों में लग जाता है। 'गोदान' में गोबर और झुनिया तथा सीलिया और मातादीन के विवाह को चित्रित करते हुए उन्होंने विधवा विवाह का ही नहीं बल्कि अंतरजातीय विवाह का भी चित्रण किया है। मातादीन एवं सिलिया के विवाह का समर्थन करते हुए प्रेमचंद एक सामाजिक क्रांति की ओर बढ़ते हुए दिखाई देते हैं। 'रंगभूमि' का नायक सूरदास चमार जाति का है। जो गांधीवादी विचारों पर चलता है अज्ञय का उपन्यास 'शेखर : एकजीवनी' गांधीजी के अछूतोंद्धार के विचार को नए प्रयोग के साथ प्रकट करता है। उपन्यास का नायक शेखर ब्राह्मण छात्रों का छात्रावास छोड़कर अछूत छात्रो के छात्रावास में रहने लगता है। वह सदाशिव, राघवन आदि अछूत छात्रों की सहायता से अछूतोंद्धार समिति का निर्माण करता है, तथा अछूत बालकों के लिए स्कूल खोलकर पढ़ाता है। पाण्डेय बेचनशर्मा 'उग्र' का उपन्यास 'मनुष्यानंद' गांधीवाद से प्रभावित होकर अछूतोंद्धार का आंदोलन चलाता है। सियाराम शरणगुप्त ने 'अंतिम आकांशा' उपन्यास में सामाजिक विषमता के प्रश्न को उठाया है। उपन्यास में रामलाल निर्धन निम्नवर्गीय पात्र हैं, इसके प्रति समाज के अभिजात वर्ग की मानवीय सहानुभूति का उपजना गुप्तजी के गांधीवादी दृष्टिकोण को रेखांकित करता है। गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित लिखा गया उपन्यास 'अग्निबीज' में भी दलित समस्याओं का चित्रण किया है। गांधीवादी विचारों से प्रभावित होकर नई पीढ़ी के युवक श्यामा के नेतृत्व में सुनीत, सागर और मुराद गांधीवाद से प्रभावित होने के कारण ऊंच–नीच जातीयता के बंधन नहीं मानते। सागर दलित होने के बावजूद इस संगठन का अभिन्न हिस्सा था। वे सब जब दलित ने तामूसई महतो को जब पुलिस गिरफ्तार करके ले जाती है तो गांधीवादी साधो काका के नेतृत्व में सभी युवक हाथ में तिरंगा लेकर पुलिस थाने पर जुलूस निकालते हैं वह अहिंसा के मार्ग से। हिंदी के अनेक उपन्यासों पर गांधी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है। अनंत गोपाल शेवड़े के उपन्यास 'ज्वालामुखी', 'भग्नमंदिर', 'कोरा कागज' तथा 'इंद्रधनुष्य', शिवप्रसाद सिंह का 'शैलुष', विष्णु प्रभाकर का 'अर्धनारीश्वर', गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया', भगवतीशरण मिश्र का 'शांतिदूत', कमलेश्वर का 'रेगिस्तान', अमृतलाल नागर का 'अमृत और विष', जैनेंद्र का 'परख', फणीश्वरनाथ रेणू का 'मैला आंचल', विवेकी राय का 'श्वेतपत्र', भगवतीचरण वर्मा का 'सीधी सच्ची बातें' आदि अनेक उपन्यासों पर गांधीवाद की स्पष्ट छाप दिखाई देती है ।

सारतः कहा जा सकता है कि गांधीजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व इतना विशाल है जिससे अनेकों क्षेत्र प्रभावित हुए हैं। हिंदी साहित्य में गांधी विचारधारा का प्रभाव केवल उनके युग में ही नहीं अपितु आज और भविष्य में भी रहेगा। गांधीवाद आज भी उतना ही प्रासंगिक है गांधीजी आज सिर्फ भारत के ही नहीं विश्व के महात्मा बन चुके हैं। विश्व कल्याण भाव से प्रेरित गांधी विचार वैश्विक अनमोल संपत्ति है। आज के कठिन ,संघर्ष से युक्त, दहशत से भरे युद्ध के क्षितिज पर खड़े विश्व को यदि इस पीड़ा से मुक्ति पानी हो तो गांधीवादी दर्शन को पर्याय नहीं है। तभी विश्व शांति प्रस्थापित हो सकती है। विश्वव्यापी विचारों की गांधीविचारधारा की गूंज समय की पहरेदार है। उसकी प्रतिध्वनि हिंदी साहित्य में भी प्रतिबिंबित हुई है।

संदर्भ सूची

1. लेखक की बात गांधीवाद की रूपरेखा –संपा. रामनाथ सुमन, पृष्ठ. ३२
2. नवम दशक के आंचलिक उपन्यास –डॉ. पांडुरंग पाटील, पृष्ठ .१५
3. गांधीजी का शिक्षा दर्शन– डॉ. कमला त्रिवेदी, पृष्ठ .१६०
4. प्रेमचंद साहित्य और संवेदना (लेख –'भारतीय गांव का आधुनिक इतिहास' – रेखा शर्मा) संपादक पी.वी. विजयन, पृष्ठ. ७५
5. मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल – डॉ. पारसनाथ मिश्र, पृष्ठ २३२– २३३
6. संपूर्ण गांधीवाङ्मय भाग– 19, पृष्ठ.६१–६२